❊ प्रस्तावना :

विद्यार्थी जीवन से ही मेरी हिन्दी साहित्य में रूचि रही है। मैंने साहित्य में अनेकों रचनाएँ पढ़ी, उनमें से कई लेखक–लेखिकाओं के साहित्य ने मुझे बहुत ही प्रभावित किया है। इन हर एक ने अपने–अपने साहित्य में समाज में नारी की जो स्थिति है उसकी जो समस्या है उसका निरूपण किया है। कॉलेज काल के दरम्यान मैंने कई लेखक–लेखिकाओं का साहित्य पढ़ा। एम. ए. के अध्ययन के दौरान हिन्दी साहित्य से गहरा रिस्ता जुड़ा। एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही मुझे अनुसंधान के प्रति जिज्ञासा रही है। मैंने **एम. फिल.** के लिए **"यशपाल की कहानियों में नारी समस्या"** विषय पर लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया था। इससे अनुसंधान के प्रति मेरी रूचि एवं जिज्ञासा और बढ़ती गई। मेरे अध्ययन के जीवन में मुझे कई आधुनिक लेखक–लेखिकाओं के उपन्यास पढ़ने का अवसर मिला। इसमें शिवानी के 'अतिथि' उपन्यास से प्रभावित होकर मैंने शिवानी के समस्त उपन्यास पढ़ डाले। शिवानी के समस्त उपन्यास पढ़ने के पश्चात् मेरे मन में यह विचार आया कि शोधकार्य करूँगी तो शिवानी के उपन्यास साहित्य पर ही। तत्पश्चात् मैंने विषय–चयन हेतु आदरणीय डॉ. आर. एम. पाण्डेय जी से विचार विमर्श करने के बाद **"शिवानी के उपन्यासों में नारी : एक अध्ययन"** मेरे शोधकार्य का मुख्य विषय बना।

❊ संशोधन के प्रति रूचि :

साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। साहित्य मनुष्य को युग युग से प्रेरणा भी देता रहा है। समसामायिक जीवन में मनुष्य जो कुछ देखता है, सुनता है, अनुभव करता है, उसका दस्तावेज साहित्य है। आज नारी सजग, शक्ति, सम्पन्न, स्वतंत्र एवम् आकर्षक

व्यक्तित्व को लेकर जीवन के विविध क्षेत्रों में तेजस्वी तारिका के समान चमकती हुई नजर आती है।

पिछले कई सालों से अध्ययन कार्य करते समय मैंने नारी जीवन को सूक्ष्मरूप से देखने का प्रयत्न किया है। स्वयं नारी होने के कारण नारी मन को नारी के माध्यम से देखने का प्रयास किया है। इस शोधकार्य में नारी द्वारा नारीत्व की समीक्षा करने का प्रयास हो रहा है। अपनी पसंदगी के विषय में कार्य करने का मौका हर किसी को नहीं मिलता। अपनी पसंदगी का विषय मिलने पर मेरा उत्साह और भी बढ़ गया। प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी ने किसी न किसी रूप में अपने प्रति होनेवाले अन्याय का विरोध किया है। नारी के इस विरोध को मैंने अपने शोधकार्य में प्रदर्शित करने का प्रयास किया है।

❊ मौलिकता एवं योगदान :

आधुनिक हिन्दी कथा–साहित्य में गौरा पंत शिवानी ने विविध उद्देश्यों को सामने रखकर ही साहित्य की रचना की है। शिवानी की साहित्य रचना का प्रमुख उद्देश्य पुरुष प्रधान समाज में नारी की जो स्थिति है उसे मुक्त कराना है और उसे पुरुष की सहयोगिनी के रूप में स्थापित करना है। शिवानी के साहित्य में जो नारी की स्थिति है वह पूरी दुनिया की नारियों की है। मौखिक स्तर पर देखा जाए तो आज की नारी को पूर्ण स्वतंत्र मान लिया गया है, परंतु वह मात्र कानूनी स्वतंत्रता है। सामाजिक एवम् इन्सानी स्वतंत्रता तो उसे आज भी नहीं मिल पाई। यह सब पाने के लिए नारी को स्वयं जागृत होकर संघर्षरत रहना होगा। नारी का जो अधःपतन हो रहा है उसे उत्थान की ओर ले जाना मेरा संशोधन का मूल उद्देश्य रहा है।

इस शोधकार्य में मैंने **"शिवानी के उपन्यासों में नारी : एक अध्ययन"** विषय पसंद किया है। इसमें शिवानी के उपन्यासों में जो नारी पात्र है उसकी जो समस्याएँ हैं, उसे उजागर किया है। इसमें मैंने अपने मौलिक विचारों को प्रस्तुत करते हुए आज के युग की नारी की स्थिति एवम् शिवानी के उपन्यासों की नारी स्थिति की चर्चा की है।

❊ शोध–दृष्टि :

अपने इस शोधकार्य के लिए मैंने यथासम्भव पूर्वाग्रह रहित एवम् तटस्थतापूर्वक विश्लेषित करने का प्रयास किया है।

मैंनें इस शोध–प्रबन्ध को निम्नलिखित छः अध्यायों एवं उपसंहार में विभाजित किया है। अध्ययन की सुचारू सुविधा हेतु उसका संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया है, जो इस प्रकार है :

प्रथम अध्याय : शिवानी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

१.१ शिवानी का व्यक्तित्व

- १.१.१ प्रस्तावना
- १.१.२ जन्म और परिवार
- १.१.३ बचपन और शिक्षा
- १.१.४ शिवानी का विवाह और दाम्पत्य जीवन
- १.१.५ विविध विद्वानों से साहित्यिक प्रेरणा
- १.१.६ विविध रूपिणी शिवानी
- १.१.७ शिवानी को पुरस्कार एवं उपाधियाँ
- १.१.८ शिवानी का निधन

१.२ शिवानी का कृतित्व

१.२.१ शिवानी के उपन्यास

१.२.२ शिवानी के कहानी संग्रह

१.२.३ शिवानी के संस्मरण

१.२.४ शिवानी के निबंध

१.२.५ शिवानी के रिपोतार्ज

१.२.६ शिवानी का यात्रा साहित्य

१.२.७ शिवानी का लोकसाहित्य

१.२.८ शिवानी का बालसाहित्य

द्वितीय अध्याय : शिवानी के उपन्यासों का परिचय :

२.१ हिन्दी उपन्यास का स्वरूप

२.२ शिवानी के बृहत उपन्यासों का परिचय

२.२.१ मायापुरी

२.२.२ चौदह फेरे

२.२.३ कृष्णकली

२.२.४ भैरवी

२.२.५ श्मशान चंपा

२.२.६ सुरंगमा

२.२.७ अतिथि

२.२.८ चल खुसरो घर अपने

२.२.९ कालिंदी

२.३ शिवानी के लघु उपन्यासों का परिचय

२.३.१ कैंजा
२.३.२ अभिनय
२.३.३ विषकन्या
२.३.४ रतिविलाप
२.३.५ माणिक
२.३.६ रथ्या
२.३.७ तर्पण
२.३.८ गैंडा
२.३.९ किशनुली का ढाँट
२.३.१० कृष्णवेणी
२.३.११ मोहब्बत
२.३.१२ विवर्त
२.३.१३ तीसरा बेटा
२.३.१४ पूतोंवाली
२.३.१५ बदला
२.३.१६ पाथेय

तृतीय अध्याय : **शिवानी के उपन्यासों में नारी :**

३.१ विद्वानों के विचारों में नारी
३.२ भारतीय समाज में नारी का स्थान
३.३ नारी वैदिक ाकल से लेकर आज तक
३.४ हिन्दी साहित्य में नारी जीवन
३.५ हिन्दी उपन्यासों में नारी जीवन
३.६ शिवानी के उपन्यासों में नारी जीवन

चतुर्थ अध्याय : **शिवानी के उपन्यासों में नारी समस्याएँ :**

४.१ समस्या, साहित्य और समस्या साहित्य की अनिवार्यता
४.२ नारी समस्या
४.३ शिवानी के उपन्यासों में विविध समस्याएँ

४.३.१ विवाह और वैवाहिक जीवन की समस्याएँ

४.३.२ शिवानी के उपन्यासों में नारी समस्याएँ

४.३.३ शिवानी के उपन्यासों में अन्य समस्याएँ

पंचम् अध्याय : शिवानी के उपन्यासों में आधुनिकता :

५.१ आधुनिक शब्द का अर्थ

५.२ आधुनिकता की परिभाषा एवं स्वरूप

५.३ हिन्दी साहित्य एवम् उपन्यासों में आधुनिकता

५.३.१ पारिवारिक विघटन

५.३.२ धन वैभव का आकर्षण

५.३.३ स्वेच्छा से प्रेम

५.३.४ यौन सम्बन्ध

५.३.५ प्रदर्शन प्रियता

५.३.६ तथाकथित आधुनिकता

५.३.७ शिवानी के उपन्यासों में धनिक वर्ग की आधुनिकाएँ

षष्ठम् अध्याय : शिवानी के उपन्यासों की भाषा और शैली :

६.१ प्रस्तावना

६.२ भाषा

६.३ मुहावरें एवं कहावतें

६.२ लोकगीत

६.२ बिम्ब, प्रतीक एवं अलंकार

६.२ पहाड़ी जीवन एवं प्रकृति से लिए गए उपमान

६.२ हास्य व्यंग्य

६.२ भावुकता एवम् मार्मिकता

६.२ शिवानी के उपन्यासों का शिल्प विधान

– उपसंहार

– संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रकरण सार

प्रथम अध्याय

शिवानी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तुत अध्याय को दो भागों में विभाजित किया है। प्रथम भाग में शिवानी का व्यक्तित्व और द्वितीय भाग में शिवानी का कृतित्व।

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में शिवानी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सन् १९५७ से लेकर आज तक, समाज को शिवानी अपने उपन्यासों से प्रभावित कर रही है। आधुनिक हिन्दी कथा–साहित्य की लोकप्रिय एवं सफल हस्ताक्षर यानी शिवानी। बड़े सौभाग्य की बात है कि शिवानी का जन्म अत्यंत समृद्ध एवं संपन्न परिवार में हुआ। शिवानी के व्यक्तित्व के निर्माण में जहाँ अनेक महानुभावों का हाथ है वहीं श्रेष्ठ रचनाकारों एवं कलाकारों ने उन्हें लिखने के लिए सदा प्रोत्साहित किया है। विभिन्न भाषाओं पर अधिकार, साहित्य एवं कला का गहरा अध्ययन, मातृभूमि के प्रति कृतज्ञता आदि गुणों से शिवानी ने साहित्य सृजन में गजब की सफलता पाई है। उन्होंने उपन्यास, नाटक, निबंध, कहानी संग्रह, संस्मरण, रिपोतार्ज, यात्रा–साहित्य, लोक–साहित्य, बाल–साहित्य आदि साहित्य विधा का सफलता

पूर्वक सृजन किया है। लगन, ईमानदारी, निष्ठा एवं प्रेम की प्रतिमूर्ति यानी यह शिवानी का साहित्य संसार है। पाठकों के जगत में शिवानी का साहित्य जितना लोकप्रिय है, समीक्षा जगत में उनके साहित्य का आदरणीय स्थान रहा है। उसे विशेष पुरस्कार, प्रेमचंद पुरस्कार, स्तरीय पुरस्कार, रामचंद्र शुक्ल पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

द्वितीय अध्याय

शिवानी के उपन्यासों का परिचय

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत शिवानी के उपन्यास साहित्य का परिचय दिया गया है। साथ हिन्दी उपन्यास का स्वरूप का परिचय भी दिया गया है। शिवानी के बृहत उपन्यास और लघु उपन्यास का परिचय दिया है। वर्तमान युग विज्ञान का है, गद्य का है और सही मायने में उपन्यास का है। एक समय था जब भारतीय साहित्य में महाकाव्य को सर्वश्रेष्ठ विधा मानकर उसकी निर्मिती होती रही। आज महाकाव्य का स्थान उपन्यास विधा ने ले लिया है। बृहत उपन्यास में जीवन की विराटता, व्यापकता तथा गरिमा का सविस्तार चित्रण होता है।

शिवानी ने अपने नौ बृहत उपन्यासों में नारी की स्थिति का एवं समाज का सर्वांगीण चित्रण किया है। जैसे – 'मायापुरी' उपन्यास में उच्चवर्ग की अनैतिक और मध्यवर्ग की नैतिकता का मार्मिक ढंग से चित्रण किया है। 'चौदह फेरे' में विवाह की समस्या का चित्रण किया है। 'कृष्णकली' में कुष्ठरोगी परिवार की समस्या को दिखाया है। 'भैरवी' में कुमाऊ के अंचल विशेष से सम्बन्धित है। 'श्मशान चंपा' में श्रमशील दुःखित नारी का वर्णन किया गया है। 'सुरंगमा' में स्वाभिमानी नारी का चित्रण किया है। 'अतिथि' में उच्चवर्ग की मानसिकता के साथ साथ अंधविश्वासों के परिणाम का चित्रण किया है। 'चल खुसरो घर

अपने' में नारी की मनोव्यथा और दहेज की समस्या का चित्रण किया है। 'कालिंदी' उपन्यास में शिक्षित नारी की मनोवेदना का चित्रण किया है।

गति और तनाव आधुनिक युग की देन है। जीवन में आयी व्यस्तता और समयाभाव के कारण वर्तमान उपन्यासकार लघु उपन्यास लिखने के बाध्य है। शिवानी के कुल सोलह लघु उपन्यास हैं, जिनकी विस्तृत चर्चा भी इस अध्याय में की गई है। जैसे – 'रतिविलाप' उपन्यास की कथावस्तु आत्मपरक है। 'माणिक' में अविवाहित स्वार्थ परायणता, यौन कुंठा, पतिहंता नारी का चित्रण है। 'रथ्या' में नारी की अन्तर्द्वन्द्व की कहानी है। 'गैंडा' में शिवानी ने नारी की पारस्परिक ईर्ष्या का, अनैतिक सम्बन्ध का, रूपाकर्षण की मदान्धता की ओर संकेत किया है। 'किशनुली का ढाँट' पगली लड़की की कहानी है। 'विवर्त' में भारतीय एवं पाश्चात्य दो विरोधी प्रवृत्तियों का चित्रण किया गया है। 'कृष्णवेणी' में वैवाहिक कुष्ठरोगियों की समस्या का चित्रण किया है। 'मोहब्बत' में ग्रामीण अंचल के साथ साथ विदेश का वर्णन किया है। 'तीसरा बेटा' में शिवानी ने परिवार में आये हुए रिश्तों के बदलाव का जीता जागता उदाहरण प्रस्तुत किया है। 'पूतोंवाली' में पाँच पुत्रों के माँ–बाप की असहाय परिस्थिति का वर्णन किया है। 'बदला' उपन्यास में विद्रोहिणी नारी की व्यथा का चित्रण किया है। 'पाथेय' में त्यागी नारी की व्यथा का चित्रण किया है।

इस तरह देखा जाय तो शिवानी के प्रत्येक उपन्यास नायिका प्रधान बन पड़ा है। एक युग था जब भारतीय समाज में नारी ही नारी की दुश्मन हुआ करती थी। समय बदल गया है, आज नारी ही नारी की सच्ची सखी, पथ प्रदर्शक, हिमायती एवं पक्षधर है। वर्तमान युग की राजनीति, सामाजिकता, धार्मिक एवं सांस्कृतिं झाँकियों का दर्शन उनके उपन्यास पढ़ते समय अपने आप होता है।

तृतीय अध्याय

शिवानी के उपन्यासों में नारी

इस अध्याय में शिवानी के उपन्यासों में नारी जीवन के अंतर्गत निम्न प्रकार से वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय को छः भागों में विभाजित किया है। जैसे – विद्वानों के विचारों में नारी, भारतीय समाज में नारी का स्थान, नारी वैदिक काल से लेकर आज तक, हिन्दी साहित्य में नारी जीवन, हिन्दी उपन्यासों में नारी जीवन एवं शिवानी के उपन्यासों में नारी जीवन। इस भाग को पेटा विभाग में विभाजित किया है। जैसे – माता रूप, पत्नि रूप, प्रेयसी रूप, बहन रूप, सास रूप, पुत्री रूप, सखी रूप, सपत्नी रूप, नारी का साहसी रूप, नारी का त्यागी रूप, नारी का आत्मपीड़क एवं परपीड़क रूप, नारी का समाज सेविका रूप, नारी के कमजोर रूप का विवेचन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय

शिवानी के उपन्यासों में नारी समस्याएँ

इस अध्याय में शिवानी के उपन्यासों में नारी समस्याओं को रेखांकित किया गया है। जिसमें समस्या, साहित्य और समस्या साहित्य की अनिवार्यता, नारी समस्या एवं शिवानी के उपन्यासों में विविध समस्याओं का चित्रण किया है। सुविधा के लिए इसे तीन भागो में विभाजित किया है – जैसे, विवाह और वैवाहिक जीवन की समस्याएँ, विवाह पूर्व नारियों की समस्या, देहज की समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, स्वेच्छा से या प्रेम विवाह से निर्मित समस्या, बहुपत्नित्व की समस्या, वैवाहिक जीवन की समस्या, विवाह विच्छेद या परित्यक्ता की समस्या, आंतरजातीय विवाह की समस्याओं का वर्णन किया है।

द्वितीय भाग में शिवानी के उपन्यासों में नारी समस्याएँ, जिसमें – शिक्षित नारियों की समस्याएँ, कामकाजी या नौकरीपेशा महिलाओं की समस्याएँ, अविवाहित नारियों की समस्याएँ, बलात्कारित नारी की समस्या, कुँआरी माता या विधवा समस्या, आभूषणप्रिय नारियों की समस्या, शोषित नारी जैसी समस्याओं का वर्णन किया है।

तृतीय भाग के अंतर्गत शिवानी के उपन्यासों में अन्य समस्याओं का वर्णन किया है। जिसमें आर्थिक समस्या, वृद्धा समस्या, अंधविश्वास की समस्या, अनाथ बालक की समस्या, शीलभ्रष्ट नेताओं की समस्याओं का वर्णन किया है।

पंचम् अध्याय

शिवानी के उपन्यासों में आधुनिकता

इस अध्याय के अंतर्गत शिवानी के उपन्यासों में आधुनिकता का विवेचन किया है। जिसमें – 'आधुनिक' शब्द का अर्थ, 'आधुनिक' शब्द की परिभाषा एवं स्वरूप, हिन्दी साहित्य में आधुनिकता, हिन्दी उपन्यासों में आधुनिकता की चर्चा की गई है।

शिवानी के उपन्यासों में आधुनिकता की चर्चा की है। जैसे – पारिवारिक विघटन, धन वैभव का आकर्षण, स्वेच्छा से प्रेम, यौन सम्बन्ध, प्रदर्शन प्रियता तथा कथित आधुनिकता, शिवानी के उपन्यासों में धनिक वर्ग की आधुनिकताओं का चित्रण किया है।

षष्ठम् अध्याय

शिवानी के उपन्यासों की भाषा और शैली

इस अध्याय के अंतर्गत शिवानी के उपन्यासों की भाषा और शैली की चर्चा की गई है। जिसमें – शिवानी ने अंग्रेजी, संस्कृत, ऊर्दू, गुजराती, पहाड़ी, कुमाऊनी, बंगला आदि

भाषाओं के शब्द एवं वाक्यों का प्रयोग किया है। उनके उपन्यासों में लोकगीत, बिम्ब, प्रतीक एवं अलंकार का प्रयोग भी हुआ है। शिवानी के उपन्यासों में पहाड़ी जीवन एवं प्रकृति से लिए गए उपमान, हास्य–व्यंग्य, भावुकता एवं मार्मिकता का भी प्रयोग हुआ है, उसका सुंदर चित्रण शिवानी ने अपने उपन्यासों में किया है।

शिवानी के उपन्यासों का शिल्प–विधान में कथानक, पात्र एवं चरित्र चित्रण, देशकाल या वातावरण और शैली के स्वरूप का वर्णन किया गया है। शिवानी के उपन्यास में आत्म–कथनात्मक शैली, प्रतीकात्मक शैली एवं पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

उपसंहार

शोध–प्रबन्ध के अंतिम चरण उपसंहार के अंतर्गत समस्त अध्यायों का निष्कर्ष एवं मूल्यांकन प्रस्तुत किया है।

यह शोध–प्रबन्ध को तैयार करने में जिन पुस्तकों की मैंने सहायता ली है, उसकी संदर्भ सूची प्रस्तुत करके शोध–प्रबन्ध का समापन करने का प्रावधान रखा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

✍ बृहत् उपन्यास :

१. शिवानी – कृष्णकली – भारतीय ज्ञानपीठ, १८, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली, इक्कीसवाँ संस्करण, २००८

२. शिवानी – अतिथि – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, पहला संस्करण, २००६, चौठी आवृत्ति, २०१०

३. शिवानी – सुरंगमा – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, पहला संस्करण, चौथी आवृत्ति, २०१०

४. शिवानी – कालिंदी – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, चौठी आवृत्ति, २०११

५. शिवानी – चौदह फेरे – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, नवीन संस्करण, १९९७

६. शिवानी – मायापुरी – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, नवीन संस्करण, १९९७

७. शिवानी – श्मशान चम्पा – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, चौठी आवृत्ति, २०११

८. शिवानी – भैरवी – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, चौठी आवृत्ति, २०११

९. शिवानी – चल खुसरो घर अपने – सरस्वती विहार, दिल्ली, संस्करण, १९९१

✍ लघु उपन्यास :

१०. शिवानी – पूतोंवाली – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, चौठी आवृत्ति, २००९

११. शिवानी – कैंजा – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, चौठी आवृत्ति, २००९

१२. शिवानी – विषकन्या – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, चौठी आवृत्ति, २००९

१३. शिवानी – तीसरा बेटा – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, चौठी आवृत्ति, २००९

१४. शिवानी – पूतोंवाली – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, तीसरी आवृत्ति, २००९

१५. शिवानी – किशनुली का ढाँट – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, तीसरी आवृत्ति, २००९

१६. शिवानी – कृष्णवेणी – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, तीसरी आवृत्ति, २००९

१७. शिवानी – मोहब्बत – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, तीसरी आवृत्ति, २००९

१८. शिवानी – पाथेय – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, संस्करण, १९९१

१९. शिवानी – माणिक – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, २००७

२०. शिवानी – तर्पण – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, २००७

२१. शिवानी – रथ्या – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, २००७

२२. शिवानी – गैंडा – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, संस्करण, १९८७

२३. शिवानी – अभिनय – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, संस्करण, १९९७

२४. शिवानी – बदला – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, संस्करण, १९९१

२५. शिवानी – विवर्त – राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८४

कहानी संग्रह :

२६. शिवानी – पुष्पहार – मयूर पेपर बैक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७१

२७. शिवानी – मेरी प्रिय कहानियाँ – सरस्वती विहार, दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, १९८१

२८. शिवानी – टोला – मेसर्स कल्पना प्रकाशन, मेरठ, प्रथम संस्करण, १९८२

२९. शिवानी – क्यों – राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण, १९८३

३०. शिवानी – लाल हवेली – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, २००७

३१. शिवानी – करिये छिमा – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८९

३२. शिवानी – मेरा भाई – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८९

✍ संस्मरण संग्रह :

३३. शिवानी – चार दिन की – शब्दाकार, सुलैमान गेट, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, १९७८

३४. शिवानी – बिन्नू – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७८

३५. शिवानी – मंजीर – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८०

३६. शिवानी – झरोखा – सरस्वती विहार, दिल्ली, तृतीय संस्करण, १९८१

३७. शिवानी – झूला – राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, १९८१

३८. शिवानी – आमादेर शान्तिनिकेतन – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, २००७

३९. शिवानी – एक थी रामरती – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८६

✍ निबंध संग्रह :

४०. शिवानी – गवाक्ष – पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७५

४१. शिवानी – वातायन – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, १९७६

४२. शिवानी – दरिया – पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७८

४३. शिवानी – आकष – भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८४

४४. शिवानी – जालक – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, २००७

✍ **रिपोटार्ज :**

४५. शिवानी – अपराधिनी – हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८५

✍ **यात्रा साहित्य :**

४६. शिवानी – यात्रिक – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, २००७

४७. शिवानी – चरैवेति – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, २००७

✍ **लोक साहित्य :**

४८. शिवानी – हे दत्तात्रय – सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८५

✍ **बाल साहित्य :**

४९. शिवानी – सुखा गुलाब – राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण, १९८७

५०. शिवानी – स्वामि भक्त चूहा – राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण, १९८७

५१. शिवानी – राधिका सुन्दरी – राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण, १९८७

५२. शिवानी – अलविदा हर हर गंगे – राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण, १९८७

५३. शिवानी – आइस क्रीम महल – राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, संस्करण, १९८७

सहायक ग्रंथ सूची

१. आचार्य चतुरशेन – नारी – रीता पॉकेट बुक्स, मेरठ

२. उपाध्याय भगवतशरण – भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष १९५०

३. कुलकर्णी रेवा – हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी – चन्द्रलोक प्रकाशन, किडवई नगर, कानपुर, प्रथम संस्करण, १९९४

४. खोट सिद्धाम – शिवानी के उपन्यासों में समाज – रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता, सफेद कालोनी, जूही, कानपुर, प्रथम संस्करण, २००९

५. गर्ग मृदुला – छायावादी कवियों की नारी भावना – जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार, मथुरा, प्रथम संस्करण, १९८०

६. गर्ग नीलम मैगज़ीन – साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास में नारी – सार्थक प्रकाशन, गौतम नगर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1999

७. गीतालाल – प्रेमचंद का नारी चित्रण – हिन्दी साहित्य संसार, पटना, प्रथम संस्करण, १९६५

८. गोयल श्यामबाला – भक्तिकालीन राम तथा कृष्ण काव्य की नारी भावना (तुलनात्मक अध्ययन) – विभू प्रकाशन, साहिबाबाद, प्रथम संस्करण, १९७९

९. ठाकुर देवेश – प्रसाद के नारी चरित्र – नवयुग प्रकाशन, बैंगलोर रोड, विस्तृत विवेचन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष, १९४५

१०. जाधव अलका गडकरी – रांगेय राघव के उपन्यासों में नारी – विद्या प्रकाशन, गुजैनी, कानपुर, प्रथम संस्करण, २००९

११. जैनम सुषमा – प्रेमचंद के उपन्यासों में शोषित नारी – साहित्य सागर, धामाणी मार्केट की गली, चौडा रास्ता, जयपुर, प्रथम संस्करण, २००९

१२. दास श्याम सुंदर – हिन्दी महाकाव्यों में नारी चित्रण – साहित्य संगम, मथुरा, प्रथम संस्करण, १९७३

१३. द्विवेदी हजारी प्रसाद – बाणभट्ट की आत्मकथा – हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई, प्रथम संस्करण

१४. दिनकर – संस्कृति के चार अध्याय – उदयाचल राजेन्द्रनगर, पटना, पंचम् संस्करण, १९७०

१५. देसाई पारूकान्त – आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास – चिन्तन प्रकाशन, मछरिया रोड, नौबस्ता, कानपुर, प्रथम संस्करण, १९९४

१६. देसाई पारूकान्त – हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास – चिन्तन प्रकाशन, आवास विकास, हंसपुरम, कानपुर, प्रथम संस्करण, २००२

१७. तलवार स्वर्णकान्ता – हिन्दी उपन्यास और नारी समस्याएँ – जयभारती प्रकाशन, पीपली कोठी, कीडगंज, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९९२

१८. तिवारी सुरेशचंद्र – यशपाल और हिन्दी कथा साहित्य – सरस्वती प्रेस, बनारस, प्रथम संस्करण, १९६०

१९. तिवारी वल्लभदास – हिन्दी काव्य में नारी – जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्रथम संस्करण, संवत २०३०

२०. तिवारी वल्लभदास – हिन्दी काव्य में नारी (आमुख–ख) – जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, प्रथम संस्करण, १९७४

२१. ढेरीवाला मोहम्मद अज़हर – आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण – चिन्तन प्रकाशन, मछरिया रोड, नौबस्ता, कानपुर, प्रथम संस्करण, २००१

२२. प्रकाश ओम – आधुनिकता बोध और श्रीकांत वर्मा का कथा साहित्य – रचना प्रकाशन, नाटाणी भवन, मिश्रराजाजी का रास्ता, चाँदपोल बाजार, जयपुर, प्रथम संस्करण, २०१०

२३. पंजाबी शशिबाला – शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान – देवनागर प्रकाशन, चौडा रास्ता, जयपुर, प्रथम संस्करण, १९८१

२४. पंडित नंददुलारे बाजपेयी – आधुनिक साहित्य – लीडर प्रेस, नई दिल्ली, पाँचवा संस्करण, १९४८

२५. पुर्वर सुष्मा – शिवानी के उपन्यासों के पात्र – आराधना ब्रदर्स प्रकाशक एवं वितरक, गोविन्द नगर, कानपुर, प्रथम संस्करण, २०१०

२६. बच्चन हरिवंशराय – समसामायिक हिन्दी साहित्य – साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली, संस्करण, १९६९

२७. बागी माधवी – देवेश ठाकुर के उपन्यासों में नारी – विद्या प्रकाशन, गुजैनी, कानपुर, प्रथम संस्करण, २००१

२८. बेचन – आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास – सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९८५

२९. मदान इन्द्रनाथ – आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास (1934–36 से 1979 तक) – राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली, १९८०

३०. मधुरेश – क्रान्तिकारी यशपाल – लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९७९

३१. मधुरेश – यशपाल के पत्र – वि. मेकमिलन कम्पनी ऑफ इन्डिया लि., नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७७

३२. मानकरे भीमराव – गुरुदत्त के उपन्यासों में नारी पात्र – गरिमा प्रकाशन, मयूर पार्क, वसन्त विहार, कानपुर, प्रथम संस्करण, २००७

३३. मुंशी प्रेमचंद – कर्मभूमि – हंसराज प्रकाशन, इलाहाबाद, १९७२

३४. मिश्र पारसनाथ – मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल – गांधीमार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९७२

३५. मिश्र प्रकाशचंद्र – यशपाल का कथा साहित्य – रूपम प्रिन्टर्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७८

३६. मिश्र भगीरथ – काव्यशास्त्र – विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पंचम संस्करण, १९७२

३७. मीतल सुशीला – आधुनिक हिन्दी कहानी में नारी की भूमिकाएँ – अनुपमा प्रकाशन, बम्बई

३८. मोहरीया छाया – लघु उपन्यासों के संदर्भ में निर्मल वर्मा के उपन्यास – भारतीय ग्रंथ निकेतन, कूचा येलान, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष, १९९७

३९. मोहन यू. एस. – महात्मा गांधी का संदेश – संकलन और संपादन, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७०

४०. यशपाल – श्री अभिनंदन ग्रंथ (सप्तसिंधु प्रथम भाग) – भाषा विभाग, पंजाब, पटियाला, तृतीय संस्करण, १९५६

४१. रस्तोगी शैल – हिन्दी उपन्यासों में नारी – वि. भू. प्रकाशन, साहिबाबाद, प्रथम संस्करण, १९७७

४२. रावत अनिता – अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता – चन्द्रलोक प्रकाशन, किडवई नगर, कानपुर, प्रथम संस्करण, १९९८

४३. व्होरा आशारानी – भारतीय नारी : दशा दिशा – नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1982

४४. वर्मा रामकुमार – कुलललना (गद्य भाग) – भारतीय प्रकाशन, लखनऊ, १९६०

४५. वर्मा शीलप्रभा – महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक सन्दर्भ – विद्याविहार प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 1987

४६. वर्मा महादेवी – श्रृंखला की कडियाँ – भारती भंडार प्रकाशन, इलाहाबाद, छट्ठा संस्करण, संवत २००७

४७. विजयन पी. वी. – प्रेमचंद साहित्य और संवेदना – जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार, मथुरा (उ. प्र.), संस्करण, २००५

४८. विवेकानंद – भारतीय नारी (मराठी संस्करण) – नागपुर, प्रथम संस्करण, १९८०

४९. शर्मा ज्योत्सना – शिवानी का हिन्दी साहित्य : सामाजिक परिप्रेक्ष्य में – अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, १९९४

५०. शर्मा हरिशंकरण – हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में नारी – आराधना ब्रदर्स, कानपुर, प्रथम संस्करण, १९९२

५१. शुक्ल रामलखन – हिन्दी उपन्यास कला – सन्नमार्ग प्रकाशन, बैंग्लोर रोड, दिल्ली प्रथम संस्करण, १९७२

५२. सावंत सातपासाम्राव – शिवानी के लघु उपन्यासों में प्रतिबिंबित समाज – ए. बी. एस. पब्लिकेशन, आशापुर, सारनाथ, वाराणसी, प्रथम संस्करण, २०१०

५३. सूरी योगेश – यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएँ – चन्द्रलोक प्रकाशन, किदवई नगर, कानपुर, प्रथम संस्करण, १९९४

हिन्दी कोश :

१. मानस हिन्दी शब्द कोश (हिन्दी – हिन्दी शब्द कोश) – कमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली

२. भाषा शब्द कोष – रामशंकर शुक्ल –

स्थल : भीलाड़,

दिनांक : –०२–२०१४

(वैशाली डी. पटेल)

अध्येत्री

(डॉ. आर. एम. पाण्डेय)

मार्गदर्शक